

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ गंगान्ननिष्ठादिमाता
ॐ निसंज्ञावकाशिनी ॥ सदा नृतेन युक्ता शितथूल
ॐ अस्तुविनी ॥ १ ॥ शिवता शिनी नमास्तुते ॥ शिव
कडार्थेनमास्तुते ॥ नीलसादानमास्तुते शिवाय नमः
स्तुते ॥ २ ॥ शालाशालितके वंदमस्तुते नमः कवमस्तुते

ॐ स्वस्ति ॥ १ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ अथ
यः नासिकासंस्थितः ॥ २ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ३ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ४ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ५ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ६ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ७ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ८ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ९ ॥

पंचमनासपिंडस्वस्ति ॥ १० ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ११ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १२ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १३ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १४ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १५ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १६ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १७ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १८ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १९ ॥

नः धनसः सजात थी वृजाः सनानः सिं धूलः गजसकाः त
मनाः हिमनाः ह्यानः न्येयधः ऊर्ध्वः सताः धूपः किं
नतामः ऊर्ध्वः ॥ * ॥ **अकालमृग** * ॥ दक्षिणाः यन
हिमन्यग्वलः दाद हपिलुथ मध्वन कावः थकिं न प्रथ
तिना सपित्र ॥ **ॐ** ॥ **ॐ** ॥ यन कतः दथसः प्रत

पिलुङ्गुग्वल थय ॥ नपतः कतः कामलः जात कः बाक
अथ काय कत जाकः नपत जायः लीषत काम
नप्रता जाय ॥ **॥** यन ग्वदा जात कत म बाक ॥ अथ
अप्रत पिता अम कता म धमजः पाद सिपिन्त उ
नता र्थः प्रत पिलु ह्य धम ॥ **॥** यन सजात थी वृजा

किञ्चनतनः ऊर्ध्वर्त्तना ॥ ~~ॐ~~ ॥ ~~ॐ~~ ॥ यथा षोडशित्विन्दु यथा
शृङ्गालपतः कृष्णः कामलः तस्याव वाकः अथ ॥ ॥
कृष्णजायः वपुतजायः अथि यनयायः यनयानय
वा ~~आन~~ कः कृष्णः कामलः तस्याव वाक्यायः अथः
अथतपिताः अथकनामध्यायः अथि चिन्ता

नयकः इत्यनइष माचता यः षोडशित्विन्दु ह्य
ध्या ॥ १ ॥ अथ अथतः पिताः अथकनामध्याय
ः त्रिबुक्तुइः यथा धना यः षोडशित्विन्दु ह्य ॥
॥ २ ॥ अथ अथतः पिताः अथकनामध्यायः मिता
कः पपनदः स्वमाचता यः षोडशित्विन्दु ह्य ॥

॥ ३ ॥ **ॐ** श्रुतः पीताः ॐ मरुतानां मध्यायः पुन
नृशतृत्तः वधिः नृका उता धना धिषादतिप्रि
नृत्वध ॥ ४ ॥ **ॐ** श्रुतः पीताः ॐ मरुतानां मध्यायः
ः धिषादतिप्रिः इतिः नृका उता धना धिषादतिप्रि
पिन्तुत्वध ॥ ५ ॥ **ॐ** श्रुतः पीताः ॐ मरुतानां

मध्यायः ॥ कृष्णविद्याः पिदति वरुतनः तिलाभ
चता धिः धिषादतिप्रिन्तुत्वध ॥ ६ ॥ **ॐ** श्रुतः पीताः
पीताः ॐ मरुतानां मध्यायः हिन कृष्ण उता धना धिषादतिप्रि
चता धिः धिषादतिप्रिन्तुत्वध ॥ ७ ॥ **ॐ** श्रुतः पीताः
पीता ॐ मरुतानां मध्यायः इतिः नृका उता धना धिषादतिप्रि

निजापि कुन्तः स्व मा च ना थः वा दसि पिन्द्र स्व
धम् ॥ ८ ॥ **अ** अ अ अतः पिता अ म क ना म धम् अ
अ हा म् स्व उ धम् अ न उ त्प न्न इः स्व मा च ना थः ॥
वा दसि पिन्द्र स्व धम् ॥ ९ ॥ **अ** अ अ अतः पिता अ म
क ना म धम् अः अ त्रि म् स्व उ त्प न्नः इ स्व मा च ना

अ थः वा दसि पिन्द्र स्व धम् ॥ १० ॥ **अ** अ अ अतः पिता अ
म ना म धम् अः द स्ता ना पा त कः कृत त त पा प मा च
ना थः वा दसि पिन्द्र स्व धम् ॥ ११ ॥ **अ** अ अ अतः
पिताः अ म क ना म धम् अः क सि कृ ता त्प न्नः इ स्व
मा च ना थः वा दसि पिन्द्र स्व धम् ॥ १२ ॥ **अ** अ अः

ममः प्रिता अमृकनामधमयः तमाधकावतनि
इत्यत्रः इश्वमात्रार्थः आदक्षिपिन्दुसाधम ॥ १३ ॥
अथ अमृकनामधमयः इत्यत्र
लाः अमृकनामधमयः इत्यत्र
दक्षिपिन्दुसाधम ॥ १४ ॥ अथ अमृकनामधमयः

कनामधमयः ॥ अक्षिपुत्रवत्तमयः इत्यत्र
ार्थः आदक्षिपिन्दुसाधम ॥ १५ ॥ अथ अमृकनामधमयः
अमृकनामधमयः अक्षिपुत्रवत्तमयः इत्यत्र
इश्वमात्रार्थः आदक्षिपिन्दुसाधम ॥ १६ ॥ अथ
नमः आगतार्थः पूजाः कृपायाथ पूजायायः कि

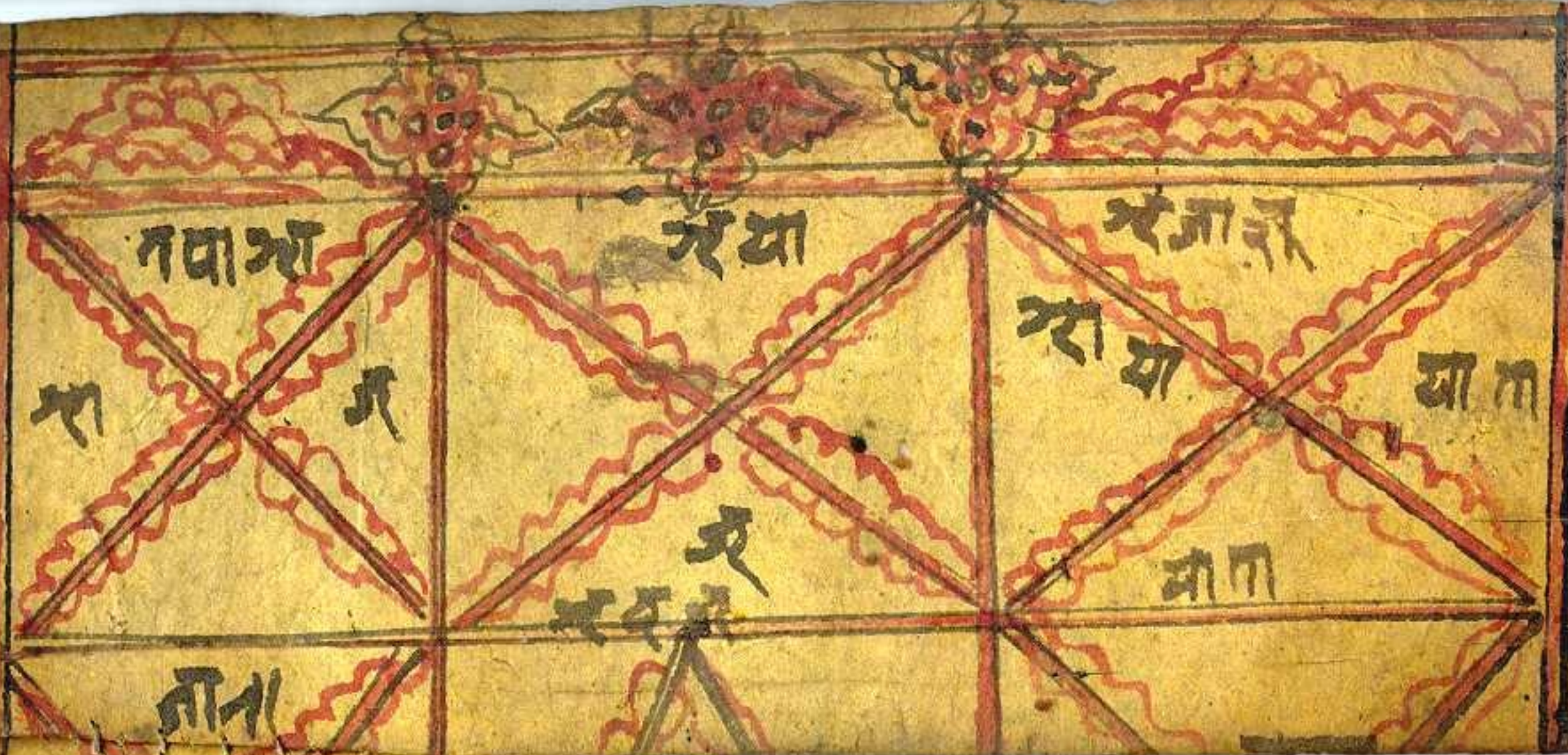
गताः जन्मताः ॥ ॐ धा द सि पि न्दुः ॥ ५ न
क्रासः दधः धर्मः संधः कृष्ण प्रगिका दयकाः
वधपनयायः वाक्य उध्यः पुजाः उध्यः तुगु ॥
वज्रपातः नाहापातः रतपतः यमात्मकः सर्व
सत्त्वकः दधः विजः पाथीनमाभिर्ह ॥ वज्रक्रा

तः रत्नसिद्धः नागमात्रात्मकः सर्वशुद्धवर्ण
क्राटधर्मनमात्मकः ॥ ॐ वज्रक्रात्रमाहाविज
दवमात्रप्रदसिद्धः सर्वसत्त्वकवृद्धः सर्वशुद्ध
नतत्त्वमवतावर्णः नाहात्मा सर्वधर्मप्रवृत्त
नः यद्वात्रात्रात्मकविजः वज्रवसनमात्मकः ॥ ५

नः द्रुधः धर्मः संघः कुमः पुरिका मता किं गवता
मज्झिमा ॥ २ ॥ यनदव क स ल पुरिः पत य
यः अशाः अजातः तया अजातः अजातः अजातः
तमयः यनाः नाम काय क का थय उजाः थव
थिर हाति नातिः जजाः खजाः द काति ता थय

इः यना रूति थयथः पत मातु जातुथ ॥ थ
न अरु उ उ नः नाम उ नः गवन्ति माता मीषा
दति थयाः वया नाम विद्या थयः ॥ धून काताः यन
विक्र थय ॥ ॥ पूति धून कावः यना किं गवता न
क धीमा नाः ॥ यन गति विमः दक्षिना द्यायः अश

या पित्र य मरु को व चर मा धा हा॥ को जा चा वा
 गदि॥ १॥ अ धा॥ २॥ स ना हि का॥ ३॥ न प न॥ ४॥ व ह प
 न॥ ५॥ प च न त॥ ६॥ ध न प न॥ ७॥ क लि पु॥ ८॥ का प न क॥ ९॥
 इ र वो धोः न नाः ति नाः॥ सि उ उ वः॥ उ म नः॥ ध नाः वा क
 ना डिः॥ ध पा धः॥ सा न नः॥ अ न नः॥ ताः॥ धो ताः॥ धो



दधुतः श्रंया श्रंजात्र ॥ अ व स त पा श्रंजात्र ॥ अ व स त पा श्रंजात्र ॥ द धु
 तलः मास ॥ श्रंया श्रंजात्र ॥ अ व स त पा श्रंजात्र ॥ द धु
 तलः मास ॥ श्रंया श्रंजात्र ॥ अ व स त पा श्रंजात्र ॥ द धु

ॐ यत्ते सः श्रुतमविकृतं किं नो मि संवाचि मा खन ए सि गणयानि कुस-
नयागिदि प्रकृतं ॥ १ ॥ रु वि त दू वि त व श रु न्द नी सा ख दं ष ड वि प्र क

ॐ उ दा ता त ल उ क नि नू धू ता वि दू ङ्कि ता ए ख ना या द
ग द्वा श्रि ति ती लि या गि ना के म हि वि र व् धा ना वि ता व
ध स्था न ल सा वि ना वि व र र वा स्था न न्द मं दा हा ना म ता व वि
श्रि ति ना वि ल हि ता श्रि व कृ वा ना हि का या गृ त वा ॥ ॐ न मः

श्रि व कृ त व ना य ॥ स्म ना ह न नू मा सा व धाः श्रि व कृ त दि श्रु तं
मि ता श्रि म त व कृ दा य श्रि कि नि य कृ त व न व कृ त्वा ना रि का मा
य ग ना य कृ ग त न म ॥ प्रौ षा ता व कृ श नि ङ्कि न हं क ल्य व ध ना
लो को कृ त य व मी त्वाः ता श्रि ति ता न म स द ध्वा न स्त ता श्रि
ध ॥ १ ॥ सर्व धं मा ना स्त ता व कृ ६ दं ॥ श्रि त्वा ता स्था न व कृ त्वा
उ म त म क दं ॥ अ ति ङि ह न्य ता न त ल दं व कृ ता श्रि ता ग व तं कृ त्वा
मा त्रि धा श्रि स न स हि तं म हा तं ल व का त्रि ना ग न मा नं द व्वा ली

गि त हडा त्या ॥ वडा वडा ॥ धन अय लहडा त्या गडा य मा वल धन
ति य हडा त्या रम न ख ग स न ध रडा त्या य न श्रवा शं य य म हडा
त्या कति कया न स व म हडा त्या ते श्र न व द म म मिति दू द स
रुडा म उ म ख मिति ति न तं रुडा म कू त म ति त क वा ल मा
नो यं कू तं म ख नं अ दू य नु धा ति वि श्वे व डु का न म मा लि न
वि कृ षा न न द व क ठ ति ख नं श्र गी ना दि ह ल म ति कं व द

ल य मा नि व स न सा ध ल न त ति ल मा न म ता द धा ति न का ठ
का र य कू कू ल शि त म ति वि रु र वी कं यं अ य वि त त म मि
नि मी न्ना र्ष व कि ति त ख या ल मि का वि श्र पि त्वा ख नी मु नु
हि मु दि कं त म्मा गु ना त ग डा का त ग न क व न्त न क म ख दि रु डा
ति न त्रा मू क क मा त ग ना ख नु म ति कं म ख ना वा म ह डा ति ति
क क या ह मा दू व मा ना य श्र ध ना द हि न क ड यं ति दू ति मा

श्रीकृष्णवक्त्रा॥ घ्राणाया ॐ व्यावक्त्रा॥ वक्रुना गवक्त्रा॥ मय्यमाकृ मवक्त्रा म
वामागनिधु ॐ अक्त्रा॥ ॥ यथिविधमृपातनि॥ आवधमृमालनि
॥ तर्माधमृना कृत्वनि॥ वामधमृप्रमृनमृवृन॥ ॥ आकासधमृ
मृपमृप्रमृनि निरुवमृधमृत्वयगनि मृसदहा वताविधुदि
॥ किंका - लका मृमाकृष॥ शावक्त्रा लकरहा लका मृकृ३
अ॥ किंवकीया वृमना मृवृगि मृवाहा॥ ॥ पाधमृवृवृ
मृात॥ ॐ शावक्त्रा मृरकद्वंद्वं कृट॥ ॐ सकिमृजी॥ मृद्वं

कृट॥ ॐ वक्त्रावे शमृति मृद्वं कृट॥ ॐ मवृशकिनि मृद्वं कृट वक्त्रा
मृनृनि मृद्वं कृट॥ ॐ शकि मृद्वं कृट॥ वामा नि
मृद्वं कृट॥ ॐ खड्गनामृद्वं कृट॥ ॐ रविनि मृद्वं कृट॥
ॐ वक्त्रा कनाटकद्वंद्वं कृट ॐ सममृकनाटकद्वंद्वं कृट ॐ व
वि सममृकलाटकद्वंद्वं कृट॥ ॐ सममृवि सममृकलाटकद्वंद्वं कृ
ट॥ ॥ ॐ कलशवमृद्वंद्वं कृट॥ ॥ ॐ कलशमृद्वंद्वं कृट॥

[illegible]

ॐ नमः सर्वज्ञं ॥ यज्जगत्तु ॥ ॐ धर्मवत्तु ॥ ॥ नमस्तु
मा मिदं नमानमस्वाहा वत्तु स्वाहा वत्तु ॥ ॥ स्तुति सर्वज्ञ
नसन्नाहृद्गदर्थप्रसादकं चिकामनित्रिकाद्रुत-
श्वरम्ब्रतन्माभूत् ॥ ॥ ॐ तयत् ॥ नमो ह्यगतवीज-
सा प्रदं रुद्र ॥ ॐ महाकल्याणि सन्निता प्रदं रुद्र ॥ ॐ अद्

मकुण्डलवप्रक्षररुद्राकुण्डलकनालागतीधनमूखाप्रक्षररु
द्राकुण्डलसतुङ्गणस्वनायप्रक्षररुद्रा॥यचञ्जुपासोद्यतमख
दीगमनिमक्षररुद्राकुण्डलधुतीनाम्रवाधनायप्रक्षररुद्रा॥कु
मसाधुसाधकाचवयूषामक्षररुद्रा॥॥०॥लातिमाग॥म
द्विनिञ्जुन्मगानननचयप्रवर्तवक्षसंनिर्मोतविश्ववज्रवस्त
तुकाययचिकुद्रांगमचयत्रचसुवतुर्द्धाचयतुस्माचनम
नितसापाहसाचसंसातकिंकिनिजालतुचितखचिलि

वज्रचतस्रुद्राचनिर्झंसंधिषूकुसुममहवज्रकर्मसिख
तुयकुनिधमृपतावसंसातकामचादिवितुषित॥तद
चिपकाचयचिततंविश्वयद्यमवदलकुम्हिकोकाशजानि
ततद्वयचिशालिकालिदिगततचक्रसूर्योममूलंतस्याव
चिश्रधवाधममूलसुशाहचक्रसमाभुलेयवित्ताकात
सर्वज्ञानसत्वादितिगंगगतमाययस्मित॥चायनादिवि
द्यासहितचक्रधुतयताकावमुवादिगुणातन्मयवृष्यकुं

मादिति ४ कलकि ७ लमावक्की गावाधि विर्लमता पूर्वकल ४८
शिवपद्मानि सत्यमति सिंहा मानं वृषवडादिदि ४ चूवनी
यमानमंगलगीतिरि ४ अतिषकमहावडी गिधमरु कं
नमस्कृतददामि सर्ववृद्धानां गिगु आलयसमूहव
४॥ ॐ सर्वतथागतसमय शिष्य ॥ ॐ दनं सर्ववृद्धानां
गिधमरु कनेमस्कृतं यथा कंदूजनाथं यमकूटपर्वक

लातवां सर्ववर्द्धं ग्रामनाम कूटपु गि विष्णु सा ॥ मकन
पमा ॥ का ॐ वज्रधगत श्वचि अति विष्णु ॥ ॐ सत्ववडी
अति विष्णु ॥ ॐ सत्ववडी अति विष्णु ॥ ॐ धर्मवडी विष्णु
॥ ॐ कर्मवडी अति विष्णु ॥ ॐ उदकम कूटवज्रधनामा
ति विष्णु काय विष्णु ॥ ॐ वरुण रक्षा च कायवज्रधनामा